Time : 07 to 08 am

HISTORY

By : Khan Sir
(मानचित्र विशेषज्ञ)

भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस (1885)

- कांग्रेस की स्थापना अंग्रेजों ने अपनी खुद की सुरक्षा वाल के रूप में किया था किन्तु कांग्रेस भारतीय क्रांतिकारियों का एक मंच बन गया।
- कांग्रेस के संस्थापक स्कॉटलैण्ड के असैन्य अधिकारी ए॰ ओ॰ ह्युम थे। इन्हें शिमला का संत (Harmit of Shimla) कहा जाता था।
- कांग्रेस के वार्षिक बैठक अधिवेशन कहलाती थी।
- कांग्रेस का अधिवेशन दिसम्बर महिने में होता था किन्तु 1930 के बाद यह जनवरी से होने लगा।
- कांग्रेस अधिवेशन के पहले अध्यक्ष व्योमेश चंद्र बनर्जी थे।
- दादाभाई नौरोजी ने इसका नामकरण भारतीय राष्ट्रीय काँग्रेस किया। पहले इसका नाम भारतीय राष्ट्रीय संघ था।
- कांग्रेस का पहला अधिवेशन पुना में प्रस्तावित था किन्तु वहां प्लेग फैल जाने के कारण इसे बम्बई के गोकुल दास तेजपाल संस्कृत विद्यालय में आयोजित किया गया। जिसने कुल 72 प्रतिनिधियों में भाग लिया।
- कांग्रेस की स्थापना जब 1885 में हुई तो उस समय भारत का वायसराय लार्ड डफरिन था।
- कांग्रेस के पहले 20 साल का काल उदारवादी का काल कहलाता है क्योंकि इस समय कांग्रेस अंग्रेजों के हाँ में हाँ मिलाती थी।
- उदारवादी के काल को बालगंगाधर तिलक ने राजनीतिक शिक्षा का काल कहा है।
- उदारवादी काल के प्रमुख नेता W.C. बनर्जी दादा भाई नौरोजी तथा रविन्द्रनाथ टैगोर थे।
- अंग्रेजों ने जब 1905 में बंगाल का विभाजन किया तो कांग्रेस के अंदर से भी बगावत प्रारंभ होने लगी जो आगे चलकर गरम दल तथा नरम दल में टुट गया।

☞ **कुछ प्रमुख बयान–**

फिरोजशाह मेहता–''कांग्रेस की आवाज जनता की अवाज नहीं''

डफरिन – ''सूक्ष्मदर्शी अल्पसंख्यकों की संस्था''

अरविंदो घोष–''कांग्रेस भीख माँगने वाली संस्था है''

गाँधी–''काँग्रेस को अब समाप्त कर देना चाहिए।''

बंगाल विभाजन (1905)

- बंगाल में राष्ट्रवाद चरम सिमा पर पहुँच गया था। अत: राष्ट्रीय चेतना को समाप्त करने के लिए अंग्रेजों ने बंगाल का विभाजन किया। किन्तु अंग्रेजों ने बंगाल विभाजन का कारण प्रसासनिक सुधार को बताया।
- बंगाल विभाजन की घोषणा लार्ड कर्जन ने 19 जुलाई, 1905 ई॰ को किया और 16 अक्टुबर, 1905 को विभाजन पूर्ण कर दिया।
- पूर्वी बंगाल में मुसलमानों को अधिक रखा और पश्चिम बंगाल में हिन्दुओं को अधिक रखा।
- अंग्रेज मुसलमानों के संरक्षक का काम करने लगे और उन्हें पूर्वी बंगाल में हिन्दुओं से लड़वाने लगे। जबकि पश्चिम बंगाल में अल्पसंख्यक मुसलमानों से अंग्रेज यह कहते थे कि ''हम तुम्हारे संरक्षक बनकर रहेंगे।''
- अंग्रेज बंगाल से फुट डालो और शासन करो की नीति प्रारंभ कर दिए। अंग्रेजों की बंगाल विभाजन की नीति सफल नहीं हो पाई क्योंकि 1905 में बंगाल के टाउन हाउस से स्वदेशी तथा बहिष्कार आंदोलन प्रारंभ हो गया था।
- भारतीयों ने अंग्रेजों के वस्त्र, विद्यालय, वस्तुएँ इत्यादि का बहिष्कार किया और स्वदेशी वस्तुओं को अपनाया।
- भारतीय लोगों ने अंग्रेजों के कपड़े धुलने, उनके यहाँ नौकरी करने तथा उनके विद्यालय में पढ़ने से मना कर दिया।
- जमशेदजी टाटा ने जमशेदपुर में TATA Iron and Steel Company (TISCO) की स्थापना की।
- विदेशी आंदोलन के दौरान भारतीयों ने विदेशी कपड़ों को जला दिया। रविन्द्र नाथ टैगोर ने वस्त्र जलाने को एक निष्ठुर अपराध कहा।
- स्वदेशी आंदोलन के प्रमुख नेता वोमेश चंद्र बनर्जी, रवीन्द्र नाथ टैगोर इत्यादि थे। इन्होंने बंगाल विभाजन को रद्द करने के लिए 'बंग-भंग' आंदोलन चलाया।
- 1911 में लॉर्ड हार्डिंग के समय ब्रिटेन के राजा जार्ज पंचम भारत आए। उनके आगमन पर दिल्ली में एक भव्य कार्यक्रम का आयोजन किया गया। जिसे दिल्ली दरबार कहते हैं। इसी दौरान 1911 में तीन घोषणाएँ की गई।

(i) बंगाल विभाजन को रद्द किया जाएगा।

(ii) बंगाल से बिहार को अलग कर दिया जाएगा।

(iii) भारत की राजधानी कलकत्ता से दिल्ली बनाई जाएगी।

इन तीनों घोषणाओं को 1 जनवरी, 1912 को लागू किया गया।

Note :– 1912 में बंगाल से बिहार अलग हुआ। 1936 में बिहार से उड़ीसा अलग हुआ। 2000 को बिहार से झारखण्ड अलग हुआ।

Remark : लॉर्ड कर्जन ने जब बंगाल का विभाजन किया तो गोपाल कृष्ण गोखले ने लॉर्ड कर्जन की तुलना औरंगजेब से किया।

क्रांतिकारी आंदोलन -

क्रांतिकारी आंदोलन दो क्षेत्रों में हुई–1. भारत 2. विदेश

- भारत में क्रांतिकारी आंदोलन दो चरणों में हुई– प्रथम चरण तथा द्वितीय चरण

By : Khan Sir (मानचित्र विशेषज्ञ)

क्रांतिकारी आंदोलन का प्रथम चरण

- ➲ बंगाल विभाजन के बाद क्रांतिकारी आंदोलन उग्र रूप ले लिया और 1910 आते-आते समाप्त हो गयी।
- ➲ गरम दल के सभी नेता ग्रामीण क्षेत्र के थे।
- ➲ क्रांतिकारी आंदोलन की शुरुआत महाराष्ट्र से बाल गंगाधर तिलक ने किया। इन्होंने क्रांतिकारी युवाओं को एकजुट होने, राष्ट्रवाद की भावना भरने के लिए तथा शस्त्र की प्रशिक्षण देने के लिए 1893 में गणपति महोत्सव तथा 1895 में शिवाजी महोत्सव प्रारंभ किया। इनका कहना था ''स्वराज मेरा जन्मसिद्ध अधिकार है और हम इसे लेकर ही रहेंगे।''
- ☞ **व्यायाम मण्डल**– इसकी स्थापना 1897 में चापेकर बंधुओं ने किया। इन्होंने पुना के प्लेग अधिकारी आयर्स्ट की हत्या कर दी क्योंकि, वह भारतीय जनता के सहयोग करने बजाय टैक्स वसूल रहा था।
- ☞ **मित्र मेला**– इसकी स्थापना 1901 में विनायक दामोदर सावरकर ने किया। यह मित्र मेला आगे जाकर अभिनव भारत बन गया।
- ➲ इसी अभिनव भारत के एक सदस्य ने नासिक के मजिस्ट्रेट जैक्सन की हत्या कर दी।
- ➲ 1907 में सावरकर लंदन गए। जहाँ 1857 के क्रांति की 50वीं सालगीरह मनाई जा रही थी। इन्होंने अपनी पुस्तक India War for Freedom में 1857 की क्रांति को भारत का पहला स्वतंत्रता संग्राम कहा है।
- ☞ **अनुशिलन समिति**– इसकी स्थापना प्रेम नाथ ढिंगरा ने किया। यह बिहार बंगाल में सक्रिय था। इसी के सदस्य प्रफुल्ल चाकी तथा खुदीराम बोस ने 1908 में मुजफ्फरपुर के जज किंग्स फोर्ड की गाड़ी पर बम फेंका किन्तु किंग्स फोर्ड की पत्नी केन्डी की मृत्यु हो गई।
- ➲ प्रफुल्ल चाकी पुलीस की डर से आत्महत्या कर लिए।
- ➲ अंग्रेजों ने खुदीराम बोस को फाँसी दे दिया। यह सबसे कम उम्र में फाँसी चढ़े थे।
- ➲ बंगाल के क्रांतिकारी अरविन्द घोष को अंग्रेजों ने खुदीराम बोस समझकर यातनाएं दिया, जिस कारण अरविन्द घोष सन्यासी बन गए और पाण्डेचेरी में ओरिविल आश्रम खोला। इन्होंने ऐसेस ऑफ गीता नाम की पुस्तक लिखा।
- ☞ **युगांतर समाज** - बंगाल के क्षेत्र से क्रांतिकारी आंदोलन वरिन्द्र नाथ घोष तथा भुपेन्द्र नाथ घोष ने किया। इन्होंने युगांतर नामक पत्रिका में कहा कि यदि 30 करोड़ भारतीयों के 60 करोड़ हाथ एक साथ खड़े हो जाए तो कोई अंग्रेजी ताकत उसे नहीं रोक सकता।
- ➲ 1910 आते-आते क्रांति आंदोलन का पहला चरण समाप्त हो गया।

क्रांतिकारी आंदोलन का दूसरा चरण

- ➲ द्वितीय चरण की शुरूआत महात्मा गाँधी के अचानक असहयोग आंदोलन समाप्त करने के कारण हुआ।

Hindustan Republic Assosiation

- ➲ इसकी स्थापना सचिन सानयाल ने Oct. 1924 में की इसी संगठन के सदस्य ने काकोरी षडयंत्र किया।
- ☞ **काकोड़ी षड्यंत्र (9 August-1925)**– सहारणपुर से लखनऊ आ रही ट्रेन को काकोड़ी नामक स्थान पर रोक कर उसमें ब्रिटिश खजाना को लुट लिया गया। इस आरोप में अस्फाकउल्ला खान, रौशन लाल, राजेन्द्र लाहिरी, राम प्रसाद विस्मिल को फाँसी दे दिया गया।
- ➲ फाँसी पर चढ़ने वाले पहले मुस्लिम क्रांतिकारी अस्फाकउल्ला खान थे।
- ➲ राम प्रसाद बिस्मिल का नारा था "सरफरोस की तमन्ना अब हमारे दिल में है देखना है जोर कितना बाजुए कातिल में है।"
- ➲ काकोड़ी कांड के मुख्य अभियुक्त चंद्रशेखर आजाद वहां से फरार हो गए बाद में इलाहाबाद के अल्फ्रेड पार्क में अंग्रेजों से मुडभेड़ हो गई।
- ➲ चंद्रशेखर आजाद ने अपनी आखिरी गोली से खुद को गोली मार ली। इस प्रकार 27 फरवरी, 1931 को इनकी मृत्यु हो गई। इनका कहना था "English has no bullet to shoot me."
- ➲ भगत सिंह ने 1926 में नौजवान सभा की गठन किया। इन्होंने 1928 में HSRA (Hindustan Soclist Republic Assosiation) का गठन किया। इसी के सदस्यों ने लाहौर के केन्द्रिय एसेम्बली में बम फेंक दिया।
- ➲ भगत सिंह ने कहा अंग्रेज सोये हुए हैं इन्हें जगाने का यही रास्ता है।
- ➲ इस बम कांड के कारण भगत सिंह, राजगुरु, बटुकेश्वर दास पर मुकदमा चलाया गया और 14 फरवरी, 1931 को इन्हें मौत की सजा सुना दी गई और 23 मार्च, 1931 को इन्हें फाँसी दे दिया गया।
- ➲ भगत सिंह का नारा था "इनकलाब जिंदाबाद" अर्थात यह क्रांति जीवित रहेगी।

Note : जतीनदास जेल में भुख हड़ताल पर बैठ गए और जेल में उनकी मृत्यु हो गई।

- ☞ **चटगांव षड्यंत्र** :- बंगाल क्षेत्र में सूर्यसेन ने क्रांतिकारी आंदोलन को 1930 में बढ़ावा दिया। इन्होंने अप्रैल, 1930 को चटगांव में अंग्रेजों के शस्त्रागार को लुट लिया। जिस कारण अंग्रेजों ने इन्हें 1934 में फाँसी दे दिया। इस प्रकार भारत का क्रांतिकारी आंदोलन समाप्त हो गया।

विदेशों में हुए क्रांतिकारी आंदोलन

- ☞ **India House** :– इसकी स्थापना 1905 में लंदन में श्यामजी कृष्ण वर्मन ने किया।
- ☞ **Stugard सम्मेलन (1907)** : – जर्मनी के इस सम्मेलन में विभिन्न राष्ट्रों को बुलाया गया जिसमें भारतीय स्वतंत्रता की जननी मैडम भिखाजी कामा ने तिरंगा झंडा लहराया।
- ☞ **गदरपार्टी** :- इसकी स्थापना लाला हरदयाल ने 1913 में USA के सेंट फ्रांसिस्को में किया। यह एक क्रांतिकारी संगठन था।
- ☞ **कामागाटा मारू (1914)** :– गुरुदत्त सिंह ने कामागाटा मारू नामक जापानी जहाज को भाड़े पर लिया और कुछ भारतीयों को कलकत्ता से लेकर कनाडा की ओर चल दिया किन्तु कनाडा सरकार अँग्रेजों के दबाव में आकर यह घोषणा किया की बैकुअर बंदरगाह पर उसी जहाज को रूकने दिया जाएगा जो रास्ते में बिना कहीं रूके आया है किन्तु कामागाटामारू जहाज सिंगापुर में रूका था। अत: कनाडा सरकार ने उस जहाज को बैकुअर बंदरगाह पर रूकने नहीं दिया। अत: जहाज वापस कलकत्ता बंदरगाह लौट आया। जब ये क्रांतिकारी वापस कलकत्ता के बजबज बंदरगाह पर पहुंचे तो अंग्रेजों और इनके बीच गोलीबारी शुरु हो गई इस घटना को कामागाटा मारू की घटना कहते हैं।

By : Khan Sir (मानचित्र विशेषज्ञ)